अध्याय -12

राजस्थान : परिचय, भौतिक स्वरूप व अपवाह तन्त्र
(Rajasthan : Introduction, Physical Features and Drainage System)

परिचय

राजस्थान का अपनी गौरवपूर्ण ऐतिहासिक परम्पराओं के कारण भारतीय इतिहास में विशेष महत्व है। राजस्थान विश्व की प्राचीन सभ्यताओं का केन्द्र रहा है। लूनी बेसिन में तिलवाड़ा (बाड़मेर), आहड़ (उदयपुर), गिलूण्ड (उदयपुर), कालीबंगा (गंगानगर) तथा गणेश्वर टीला (सीकर) में मिले अवशेष इसके प्रमाण हैं। यह भी प्रमाण मिले हैं कि प्राचीनकाल में सरस्वती व दृषद्वती नदियाँ राजस्थान को सरसब्ज करती थीं।

राजस्थान को वीरों व बलिदानियों की भूमि माना जाता है। इस प्रदेश ने बार-बार भारतीय अस्मिता की रक्षा की है। प्रदेशवासियों ने प्रतिकूल एवं विषम परिस्थितियों में भी अनुकूलन कर अपनी क्षमताओं व सूझबूझ का परिचय दिया है।

प्राचीन व मध्यकाल में राजस्थान के भिन्न-भिन्न क्षेत्र अपनी विशिष्ट प्रादेशिक पहचान बनाए हुए थे, यथा - यौद्धेय (गंगानगर), अहिच्छत्रपुर (नागौर), गुर्जरत्रा (जोधपुर-पाली), वल्ल / दुंगल / माड (जैसलमेर), स्वर्णगिरी (जालोर), चन्द्रावती (आबू), शिव / मेदपाट / मेवाड़ (उदयपुर - चित्तौड़गढ़), वागड़ (डूंगरपुर, बाँसवाड़ा), कुरू (अलवर), शूरसेन / बृजभूमि (भरतपुर, करौली, धौलपुर), ह्वे-ह्वे / हाड़ौती (बूँदी-कोटा), विराट / बैराठ (अलवर, जयपुर), जांगल (बीकानेर-जोधपुर), शाकम्भरी (सांभर) व ढूंढाड़ (जयपुर-टोंक)।

11वीं से 18वीं शताब्दी के बीच राजस्थान में कई राजवंशों का उत्थान व पतन हुआ। राजपूत राजाओं की रियासतों व ठिकानों की अधिकता के कारण ब्रिटिशकाल में राजस्थान **राजपूताना** के नाम से जाना जाता था। जयपुर-आमेर, मारवाड़, मेवाड़, कोटा, बूंदी, भरतपुर

सारणी - 12.1

राजस्थान एकीकरण के चरण

चरण	दिनांक	संघ का नाम	शामिल रियासतें
प्रथम	17-3-48	मत्स्य संघ	अलवर, भरतपुर, धौलपुर, करौली।
द्वितीय	25-3-48	राजस्थान संघ	बाँसवाड़ा, कुशलगढ़, बूंदी, डूंगरपुर, झालावाड़, किशनगढ़, कोटा, प्रतापगढ़, शाहपुरा एवं टोंक।
तृतीय	18-4-48	संयुक्त राजस्थान संघ	राजस्थान संघ + उदयपुर
चतुर्थ	30-3-49	वृहत् राजस्थान संघ	संयुक्त राजस्थान संघ + बीकानेर, जयपुर, जैसलमेर व जोधपुर।
पंचम	15-5-49	संयुक्त वृहत्र राजस्थान	वृहत् राजस्थान संघ + मत्स्य संघ।
षष्टम	26-01-50	पूर्व राजस्थान	संयुक्त वृहत्र राजस्थान + सिरोही।
सप्तम	1-11-56	राजस्थान	पूर्व राजस्थान + अजमेर-मेरवाड़ा, आबू तहसील, सुनेल टप्पा व सिरौंज।

स्त्रोत : www.rajassembly.nic.in

आदि प्रमुख रियासतें थी। आजादी के बाद वर्तमान राजस्थान राजपूताना की 19 रियासतों, 3 चीफशीप और केन्द्र शासित अजमेर-मेरवाड़ा के मिलने से अस्तित्व में आया। राजस्थान एकीकरण के चरण क्रमानुसार प्रस्तुत हैं (सारणी-12.1)।

वर्तमान राजस्थान प्रशासनिक दृष्टि से 7 संभागों, 33 जिलों, 90 उप-जिलों, 314 तहसीलों, 295 पंचायत समितियों, 222 नगर पालिकाओं एवं 9900 ग्राम पंचायतों में विभाजित है।

अवस्थिति व विस्तार

राजस्थान राज्य भारत के उत्तरी-पश्चिमी भाग में 23°03' से 30°12' उत्तरी अक्षांशों एवं 69°30' से 78°17' पूर्वी देशान्तरों के बीच अवस्थित है। क्षेत्रफल की दृष्टि से राजस्थान भारत का सबसे बड़ा राज्य है। कर्क रेखा इसके दक्षिणी छोर पर बांसवाड़ा के पास से गुजरती है। इसके उत्तर में पंजाब, उत्तर-पूर्व में हरियाणा, पूर्व में उत्तर प्रदेश, दक्षिण-पूर्व में मध्य प्रदेश एवं दक्षिण-पश्चिम में गुजरात स्थित है। राजस्थान व पाकिस्तान के बीच 1070 किलोमीटर लम्बी अन्तर्राष्ट्रीय सीमा है जो **रैडक्लिफ** के नाम से जानी जाती है। गंगानगर, बीकानेर, जैसलमेर व बाड़मेर सीमावर्ती जिले हैं। यह पतंग के आकार में पूर्व से पश्चिम में 869 किलोमीटर लम्बा एवं उत्तर से दक्षिण में 826किलोमीटर चौड़ा है (चित्र संख्या 12.1)। राजस्थान का कुल क्षेत्रफल 3.4 लाख वर्ग किलोमीटर है जो भारत के कुल क्षेत्रफल का 10.43 प्रतिशत है। यह राज्य क्षेत्रफल की दृष्टि से जर्मनी के बराबर, जापान से थोड़ा बड़ा, ग्रेट ब्रिटेन से डेढ़ गुना, श्रीलंका से 5 गुना व इजराइल से 17 गुना से भी अधिक बड़ा है।

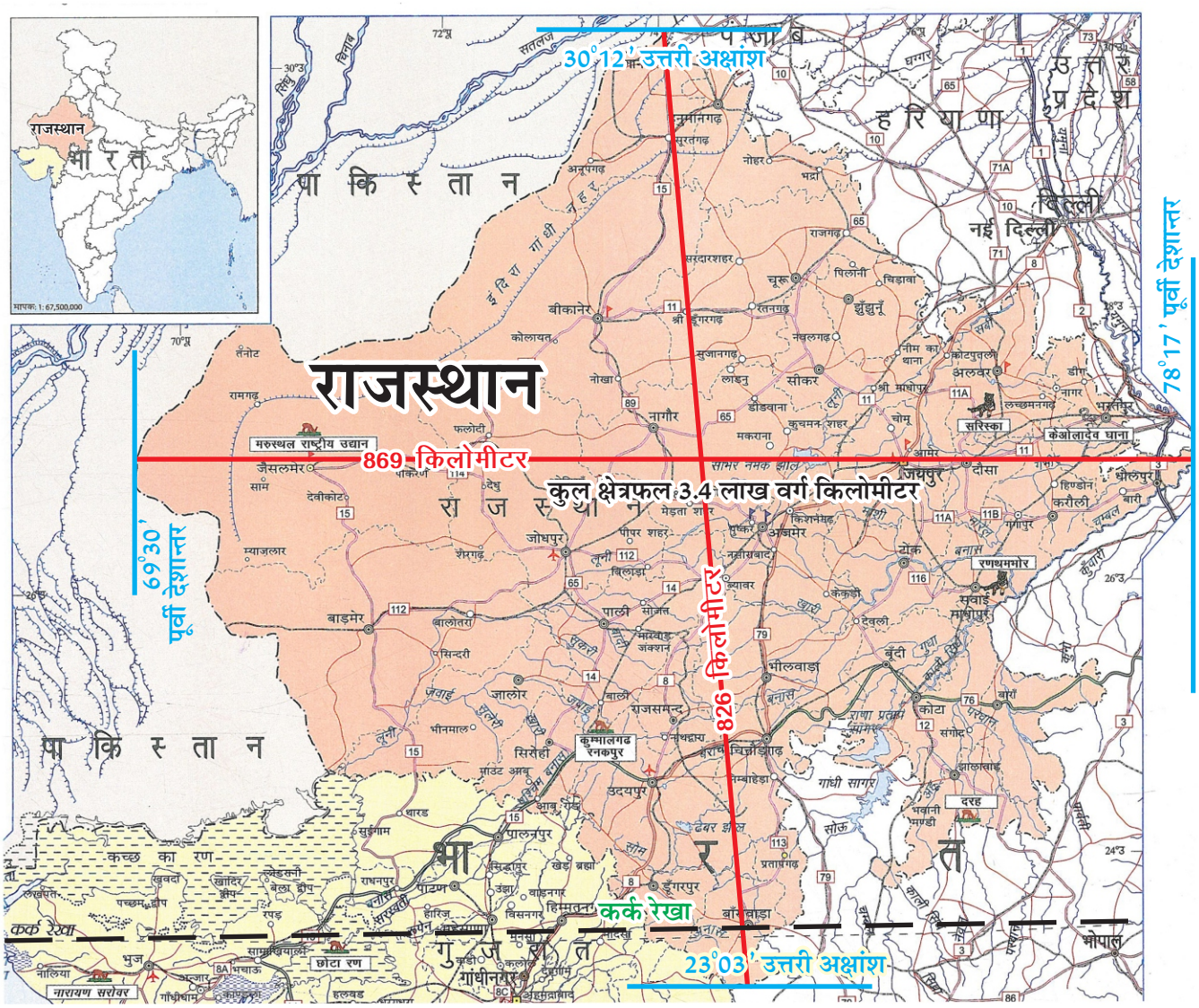

चित्र 12.1 - राजस्थान : स्थिति व विस्तार

भौतिक स्वरूप

राजस्थान का अधिकांश पश्चिमी एवं उत्तरी-पश्चिमी भाग टिथीज महासागर का ही अवशेष था जो कालान्तर में हिमालय की नदियों द्वारा लाई गई मिट्टियों से पाट दिया गया। टिथीज सागर के अवशेष के रूप में राजस्थान में आज भी सांभर, डीडवाना, पचपद्रा, लूणकरणसर आदि खारी झीलें मौजूद हैं। राजस्थान की अरावली पर्वतमाला तथा दक्षिणी पठारी भाग गौंडवानालैण्ड के भू-भाग हैं। अरावली पर्वतमाला विश्व की प्राचीनतम पर्वतमालाओं में से एक मानी जाती है। अरावली पर्वतमाला राज्य की मुख्य जल विभाजक है तथा उसे

(2) अरावली पहाड़ी प्रदेश
- (अ) दक्षिणी अरावली क्षेत्र
- (ब) मध्य अरावली क्षेत्र
- (स) उत्तरी अरावली क्षेत्र

(3) पूर्वी मैदानी प्रदेश
- (अ) बनास-बाणगंगा बेसिन
- (ब) मध्य माही व छप्पन बेसिन

(4) दक्षिणी पूर्वी पठार

चित्र 12.2 - राजस्थान : भौतिक

(अ) विन्ध्यन कगार

(ब) दक्कन लावा पठार

(1) पश्चिमी मरूस्थलीय प्रदेश

यह अरावली पर्वतमाला के उत्तर-पश्चिम और पश्चिम में विस्तृत है। यह भू-भाग समुद्र तल से 60 से 360 मीटर ऊँचा है। यह क्षेत्र गंगानगर, हनुमानगढ़, झुन्झुनू, सीकर, चूरू, बीकानेर, नागौर, जोधपुर, जैसलमेर, बाड़मेर, जालोर व सिरोही जिलों में फैला हुआ है। यह क्षेत्र बालू से आवृत है।

मानवीय प्रभाव व सिंचाई के विस्तार से कुछ क्षेत्रों (गंगानगर, हनुमानगढ़ व बीकानेर) के मरूस्थलीय परिदृश्य में परिवर्तन हो रहा है। यहां तीन प्रकार के बालू के टीले पाये जाते हैं -

(i) अनुदैर्ध्य - ये प्रचलित पवन के समानान्तर बने टीले हैं।

(ii) अनुप्रस्थ - ये वायु दिशा के लम्बवत् बने टीले हैं।

(iii) बरखान - ये अर्द्ध चन्द्राकार टीले हैं।

चित्र 12.3 - राजस्थान : भौतिक स्वरूप

धरातलीय स्वरूपों के आधार पर पश्चिमी मरूस्थलीय प्रदेश को चार भागों में विभक्त किया गया है –

(अ) बालूमय शुष्क मैदान – यह मैदान शुष्क मरूस्थलीय प्रदेश है जो राज्य की 25 सेन्टीमीटर समवर्षा रेखा के पश्चिम में स्थित है। इसमें जैसलमेर, बाड़मेर, बीकानेर तथा जोधपुर, नागौर व चूरू जिलों के पश्चिमी भाग शामिल हैं। बालू के विशाल टीलों के मध्य जैसलमेर, बाड़मेर व बीकानेर के कुछ भागों में चट्टानी भू–भाग भी हैं जो ग्रेनाइट, चूना पत्थर व बलुआ पत्थर से बने हैं। यहां तीनों प्रकार के टीले पाए जाते हैं। इस शुष्क मैदानी भाग में खारे पानी के छिछले क्षेत्र हैं जिन्हें **रन** कहते हैं।

(ब) लूनी बेसिन – यह बेसिन 25 सेन्टीमीटर से 50 सेन्टीमीटर की समवर्षा रेखा के बीच अरावली के दक्षिण–पश्चिम में अवस्थित है। लूनी बेसिन का विस्तार दक्षिणी जोधपुर, पाली, जालौर व पश्चिमी सिरोही जिलों में है। लूनी व उसकी सहायक नदियों लिलड़ी, सूकड़ी, जवाई, जोजरी तथा बाण्डी के बहाव क्षेत्र में जलोढ़क मैदान हैं। ये सभी मौसमी नदियां हैं। इस क्षेत्र में पचपद्रा मुख्य खारे पानी का क्षेत्र हैं जहां नमक बनाया जाता है।

(स) अन्त:स्थलीय प्रवाह का मैदान – इसे शेखावाटी प्रदेश के नाम से भी जाना जाता है। इस अर्द्ध–शुष्क मैदान का विस्तार झुन्झुनूं, सीकर, चूरू तथा नागौर के उत्तरी भाग में है। यह प्रदेश मध्यम व निम्न ऊँचाई के बालू के टीलों से युक्त रेतीला मैदान है। यहाँ बरखान टीले अधिक मिलते हैं। यह अन्त:स्थलीय प्रवाह क्षेत्र है। इस क्षेत्र में नदियाँ व नाले हैं जो थोड़ी दूर बहने के बाद विलुप्त हो जाते हैं। मेन्धा व कांतली इस क्षेत्र की मुख्य नदियाँ हैं। इस क्षेत्र में कई खारे पानी की झीलें हैं। सांभर, डीडवाना, कुचामन, सुजानगढ़, ताल छापर व परिहारा (चूरू) प्रमुख खारे पानी की झीलें हैं।

(द) घग्घर का मैदान – यह क्षेत्र मरूस्थल का उत्तरी भाग है जो गंगानगर व हनुमानगढ़ जिलों में फैला है। यहां बरखान प्रकार के टीले अधिक पाये जाते हैं। घग्घर इस क्षेत्र की अन्त:स्थलीय प्रवाह वाली नदी है। घग्घर की सूखी हुई सरिताओं को पुराणों में वर्णित हिमालय से निकली सरस्वती नदी का हिस्सा माना जाता है। इन्दिरा गाँधी नहर व गंग नहर से उपलब्ध सिंचाई सुविधा के कारण इस क्षेत्र में गहन कृषि की जाती है। इससे क्षेत्र में जलाधिक्य एवं क्षारीयता की समस्याएँ बढ़ गई हैं।

(2) अरावली पहाड़ी प्रदेश

अरावली पर्वतमाला राजस्थान की मुख्य व प्राचीनतम पर्वतमाला है। राज्य का 9.3 प्रतिशत क्षेत्रफल इसके अन्तर्गत आता है। यह पर्वतमाला दक्षिण–पश्चिम से उत्तर–पूर्व दिशा में कुल 692 किलोमीटर की लम्बाई में विस्तृत है। राजस्थान में यह खेड़ब्रह्मा (गुजरात सीमा) से खेतड़ी तक 550 किलोमीटर की लम्बाई में फैली है। यह सिरोही से खेतड़ी तक तो श्रृंखलाबद्ध है परन्तु उसके पश्चात यह छोटी–छोटी पहाड़ियों के रूप में दिल्ली तक फैली है। इसका विस्तार मुख्यत: राज्य के नौ जिलों सिरोही, उदयपुर, राजसमन्द, अजमेर, जयपुर, दौसा, अलवर, सीकर व झुन्झुनू में है। इस पहाड़ी क्षेत्र की औसत ऊँचाई 930 मीटर है। अरावली पहाड़ी क्षेत्र को तीन उप–प्रदेशों में बांटा गया है:–

(अ) दक्षिणी अरावली क्षेत्र (आबू से अजमेर तक),
(ब) मध्य अरावली क्षेत्र (अजमेर से जयपुर तक) तथा
(स) उत्तरी अरावली क्षेत्र (जयपुर से खेतड़ी तक)

(अ) दक्षिणी अरावली क्षेत्र – इसमें सिरोही, उदयपुर व राजसमन्द जिले सम्मिलित हैं। यहां अरावली श्रेणियाँ अत्यधिक विषम व ऊँची है। सिरोही जिले में आबू–सिरोही श्रेणी में अनेक पहाड़ियाँ व चोटियाँ हैं। इस क्षेत्र में स्थित गुरूशिखर राजस्थान की सबसे ऊँची (1727 मीटर) चोटी है। अचलगढ़ (1380 मीटर), देलवाड़ा (1442 मीटर), कुम्भलगढ़ (1224 मीटर) अन्य प्रमुख पर्वत चोटियाँ हैं। उदयपुर–राजसमन्द क्षेत्र की सर्वोच्च चोटी जरगा (1431 मीटर) है। उदयपुर के उत्तर में कुम्भलगढ़ व गोगुन्दा के बीच का पठार **भोराठ पठार** के नाम से जाना जाता है। यह पूर्व दिशा में बहने वाली नदियों का उद्गम स्थल भी है।

(ब) मध्य अरावली – यह मुख्यत: अजमेर व जयपुर के बीच फैली है। इस क्षेत्र में पर्वत श्रेणियाँ, संकीर्ण घाटियाँ व मैदान एकान्तर क्रम में पाए जाते हैं। तारागढ़ (885 मीटर) इस क्षेत्र की प्रमुख चोटी है। पश्चिमी राजस्थान की मुख्य नदी लूनी का उद्गम क्षेत्र यहाँ स्थित नाग पहाड़ है।

(स) उत्तरी अरावली – उत्तरी अरावली क्षेत्र का विस्तार जयपुर, दौसा, अलवर, सीकर व झुन्झुनूं जिलों में है। इस क्षेत्र में अरावली पर्वतमाला क्रमबद्ध न होकर छितरी हुई पहाड़ियों के रूप में पाई जाती है। इसमें शेखावाटी, तोरावाटी, जयपुर व अलवर की पहाड़ियाँ शामिल हैं। इस क्षेत्र की पहाड़ियों की सामान्य ऊँचाई 450 से 700 मीटर है। सीकर जिले में रघुनाथगढ़ (1055 मीटर), अलवर जिले में भैरांच (792 मीटर) और जयपुर में खो (920 मीटर) इस क्षेत्र की प्रमुख चोटियाँ हैं।

(3) पूर्वी मैदानी प्रदेश

यह क्षेत्र राजस्थान के 23.9 प्रतिशत क्षेत्र को घेरे हुए है। इसमें बनास बेसिन व मध्य माही (छप्पन के मैदान) को शामिल किया जाता है। वास्तव में यह नदी बेसिन प्रदेश है। इसके उत्तरी भाग में भरतपुर, अलवर, सवाई माधोपुर, करौली, जयपुर, टोंक व भीलवाड़ा

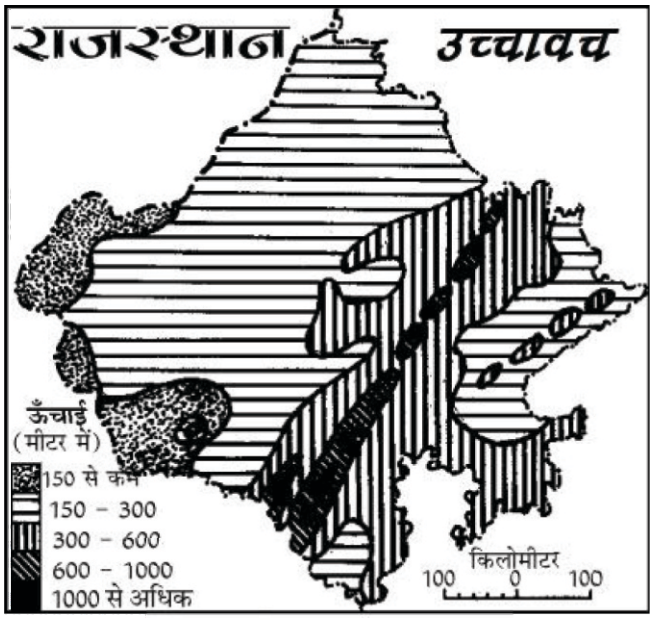

चित्र 12.4 - राजस्थान : उच्चावच

जिलों के मैदानी भाग तथा दक्षिणी भाग में डूंगरपुर, बांसवाड़ा एवं चित्तौड़गढ़ के छप्पन गांवों का मैदानी भाग शामिल है। इस प्रदेश की भूमि समतल व उपजाऊ कांप मिट्टी से बनी होने के साथ-साथ कई नदियों द्वारा सिंचित है। अरावली पर्वतमाला तथा हाड़ौती पठार के इस मध्यवर्ती भाग को दो भू-आकृतियों में बांटा जा सकता है-

(अ) बनास-बाणगंगा बेसिन - बनास व उसकी सहायक नदियों का यह मैदान दक्षिण में **मेवाड़ का मैदान** तथा उत्तर में **मालपुरा-करौली के मैदान** के नाम से जाना जाता है। बेड़च, खारी, मांसी, मोरेल व बाणगंगा इत्यादि इसकी प्रमुख सहायक नदियाँ है। इस मैदान का ढाल पूर्व व उत्तर-पूर्व की ओर है। यहां एकल पहाड़ियाँ ऊँचाई पर टेकरीनुमा हो जाती हैं। इस मैदान की औसत ऊँचाई 280 मीटर से 500 मीटर के बीच है।

चित्र 12.5 - राजस्थान : अपवाह क्षेत्र

(ब) मध्य माही-छप्पन बेसिन - यह मैदान उदयपुर के दक्षिणी-पूर्वी भाग, डूंगरपुर, बाँसवाड़ा एवं चित्तौड़गढ़ के दक्षिणी भाग में 7056वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला है। इस मैदान की औसत ऊँचाई 200 से 400 मीटर है। सलूम्बर-सराड़ा क्षेत्र को स्थानीय भाषा में **छप्पन** तथा डूंगरपुर-बाँसवाड़ा क्षेत्र को **बागड़ क्षेत्र** कहते हैं। नदियों की अधिकता के कारण बाँसवाड़ा को **सौ टापुओं का क्षेत्र** के नाम से भी जाना जाता है। माही की मुख्य सहायक नदियाँ सोम, जाखम, कागदर, झामरी आदि हैं। इस क्षेत्र में आदिवासी भील व गरासिया **वालरा** नामक स्थानान्तरित कृषि करते हैं।

(4) दक्षिण-पूर्वी पठार

राजस्थान का दक्षिण-पूर्वी पठार **हाड़ौती** के नाम से विख्यात है। यह राजस्थान के 9 प्रतिशत भू-भाग को घेरे हुए है। यहां राज्य की 13 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है। इसमें कोटा, बूंदी, बारां, झालावाड़ एवं चित्तौड़गढ़ जिले का पूर्वी भाग शामिल है। यहां लावा मिश्रित शैल व विन्ध्यन शैलों का सम्मिश्रण है। इस पठारी भाग की समुद्र तल से औसत ऊँचाई 500 मीटर है। इस क्षेत्र में काली व लाल मिट्टी पाई जाती है। चम्बल, पार्वती एवं काली सिंध इस क्षेत्र की प्रमुख नदियाँ हैं। इस पठार को भौतिक दृष्टि से दो उप-प्रदेशों में विभाजित किया जाता है-

(अ) विन्ध्ययन कगार - यह कगार मुख्य रूप से बलुआ व चूना पत्थरों से बना है। इसकी औसत ऊँचाई 350 से 550 मीटर के बीच है। कगारों का मुख बनास व चम्बल नदी के बीच क्रमबद्ध दक्षिण-पूर्व एवं पूर्व दिशा की ओर है। उत्तर में चम्बल के सहारे-सहारे ये सवाई माधोपुर, करौली व धौलपुर क्षेत्र में फैले हुए हैं।

(ब) दक्कन लावा पठार - यह दक्षिणी पूर्वी राजस्थान का चौड़ा व ऊपर उठा पथरीला भू-भाग है। यह बलुआ पत्थर व चूना पत्थर चट्टानों से निर्मित है। इसका पूर्वी व दक्षिणी भाग लावा से ढका है। यहाँ पर उपजाऊ काली मिट्टी पाई जाती है। चम्बल व उसकी सहायक काली सिन्ध व पार्वती नदियों ने कोटा में एक 'त्रिकोणीय जलोढ़ मैदान' की रचना की है।

अपवाह तन्त्र

राजस्थान की अपवाह प्रणाली अरावली पर्वतमाला से

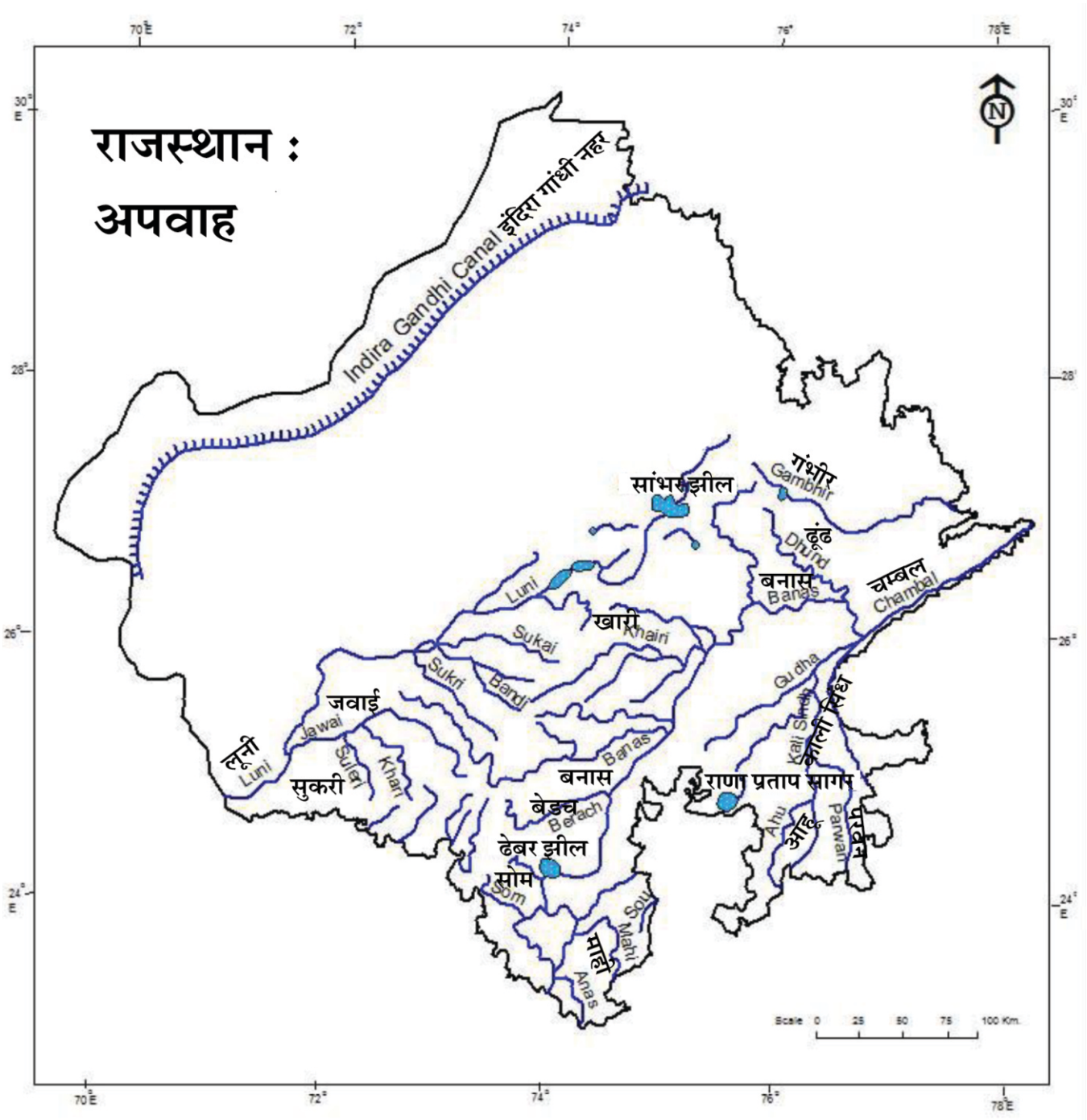

चित्र 12.6 - राजस्थान : प्रमुख नदियां, इंदिरा गांधी नहर एवं झीलें

निर्धारित होती है। भारत की महान जल विभाजक रेखा इस राज्य में बहने वाली नदियों को दो भागों में विभक्त करती है। राजस्थान के अपवाह तन्त्र को चित्र संख्या 12.5 में दर्शाया गया है।

यह जल विभाजक रेखा उत्तर में अरावली अक्ष के साथ सांभर झील के दक्षिण तक है। यहां से यह दक्षिण-पश्चिम की ओर ब्यावर से कुछ किलोमीटर पूर्व में होती हुई देवगढ़, कुम्भलगढ़ व उदयपुर के दक्षिण में हल्दीघाटी होते हुए उदयसागर तक आती है। आगे दक्षिण-पूर्व में बड़ी सादड़ी, छोटी सादड़ी से निकलती हुई प्रतापगढ़ तक चली जाती है। जल विभाजक के पश्चिमी और दक्षिणी भाग की नदियाँ अरब सागर में गिरती हैं। इन नदियों में लूनी, पश्चिमी बनास, साबरमती व माही मुख्य है। जल विभाजक के पूर्वी भाग में बनास व उसकी सहायक नदियाँ चम्बल में मिलती हैं जहाँ से पानी यमुना व गंगा

नदियों में बहता हुआ बंगाल की खाड़ी में चला जाता है। राजस्थान के बहुत बड़े भू-भाग का पानी किसी समुद्र में नहीं जाकर अंत:स्थलीय प्रवाह प्रणाली बनाता है। इस क्षेत्र में अनेक छोटी-छोटी मौसमी नदियाँ हैं जिनका पानी मरूस्थलीय प्रदेश में ही लुप्त हो जाता है। इस प्रकार प्रवाह के आधार पर राजस्थान की जल प्रवाह प्रणाली को तीन भागों में बांटा जा सकता है -

(1) बंगाल की खाड़ी में गिरने वाली नदियाँ

(i) चम्बल नदी - यह नदी मध्य प्रदेश में जानापाव पहाड़ी से निकल कर अन्त में उत्तर प्रदेश में यमुना में मिलती है। यह इस तंत्र की प्रमुख नदी है। बनास, पार्वती, काली सिंध आदि इसकी मुख्य सहायक नदियाँ है।

(ii) बनास नदी - यह भोराठ पठार की खमनौर पहाड़ी से निकलकर अन्त में सवाई माधोपुर के रामेश्वर स्थान पर चम्बल में मिल जाती है। बेड़च, कोठारी, खारी, मैनाल, बाण्डी, मांसी, ढूंढ व मोरेल इसकी मुख्य सहायक नदियाँ हैं।

(iii) बाणगंगा नदी - यह जयपुर जिले के विराटनगर से निकलकर चम्बल में मिलती है।

(iv) पार्वती नदी - मध्य प्रदेश में विन्ध्यन श्रेणी से निकलकर बारां जिले में बहती हुई पाली स्थान पर चम्बल में मिलती है।

(v) काली सिंध नदी - यह भी विन्ध्यन पर्वत से निकलकर झालावाड़ में बहती हुई चम्बल में मिल जाती है। परवन इसकी सहायक नदी है।

(2) अरब सागर में गिरने वाली नदियाँ

(i) लूनी नदी - यह अजमेर में नाग पहाड़ से निकलकर कच्छ के रन में गिरती है। बालोतरा तक इस नदी का पानी मीठा है। जोजरी, लिलड़ी, सूकड़ी, जवाई व बाण्डी इसकी प्रमुख सहायक नदियां है।

(ii) माही नदी - यह मध्य प्रदेश में अमझोर से निकलती है। यह राज्य में डूंगरपुर व बांसवाड़ा में बहती है जो आगे चलकर गुजरात में खंभात की खाड़ी में मिलती है। माही व उसकी सहायक सोम व जाखम नदियाँ **बेणेश्वर धाम में त्रिवेणी संगम** बनाती है। यह धाम आदिवासियों का प्रमुख धार्मिक स्थल है। माही नदी पर बांसवाड़ा के निकट माही बजाज सागर बांध का निर्माण किया गया है।

(iii) साबरमती नदी - यह नदी उदयपुर की पश्चिमी पहाड़ियों से निकलकर राजस्थान में 44 किलोमीटर बहकर गुजरात में खंभात की खाड़ी में गिरती है।

(3) अन्त:स्थलीय प्रवाह वाली नदियाँ

राजस्थान राज्य में अनेक छोटी-छोटी नदियाँ इस प्रकार की है जो कुछ दूरी तक बहकर रेत में विलीन हो जाती हैं। कान्तली, साबी, काकनी, घग्घर आदि इस प्रकार की प्रमुख नदियाँ है। इन नदियों में अधिक बरसात आने पर कभी-कभी बाढ़ भी आ जाती है।

झीलें

राजस्थान की झीलों को दो वर्गों में बांटा जा सकता है -

(अ) खारे पानी की झीलें

(ब) मीठे पानी की झीलें

(अ) खारे पानी की झीलें - ये झीलें राज्य के पश्चिमी मरूस्थलीय व अन्त:स्थलीय प्रवाह वाले क्षेत्र में पाई जाती हैं। ये प्राकृतिक व छिछली हैं। सांभर (जयपुर), डीडवाना (नागौर), पचपद्रा (बाड़मेर), लूणकरणसर (बीकानेर) एवं कुचामन (नागौर) प्रमुख खारे पानी की झीलें हैं। अधिकतर झीलों में व्यावसायिक स्तर पर नमक का उत्पादन किया जाता है। सांभर भारत की सबसे बड़ी खारे पानी की झील है जो लगभग 145 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैली है। यह 32 किलोमीटर लम्बी व 12 किलोमीटर चौड़ी है।

(ब) मीठे पानी की झीलें - इन झीलों का पेयजल व सिंचाई के लिए विशेष महत्व है। जयसमन्द (उदयपुर), राजसमन्द (राजसमन्द), पुष्कर (अजमेर), सिलीसेढ़ (अलवर), रामगढ़ (जयपुर), कोलायत (बीकानेर), नक्की (माउण्ट आबू), कायलाना (जोधपुर) आदि प्रमुख मीठे पानी की झीलें हैं। नदियों को रोककर राजस्थान में कई बांध भी बनाए गए हैं। ये झीलें व बांध अनुपम प्राकृतिक सौन्दर्य के कारण सैलानियों को आकर्षित करते हैं। जयसमन्द जिसे **ढेबर** झील भी कहते हैं, राजस्थान की मीठे पानी की सबसे बड़ी झील है।

महत्वपूर्ण बिन्दु

1. राजस्थान विश्व की प्राचीन सभ्यता का केन्द्र रहा है जिसके अवशेष तिलवाड़ा, आहड़, गिलूण्ड आदि में मिलते हैं।
2. वर्तमान राजस्थान का निर्माण सात चरणों में पूरा हुआ है।
3. राजस्थान को प्रशासनिक दृष्टि से 7 संभागों एवं 33 जिलों में बांटा गया है।
4. राजस्थान व पाकिस्तान के बीच की अन्तर्राष्ट्रीय सीमा को रैड क्लिफ के नाम से जाना जाता है।

5. राजस्थान क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का सबसे बड़ा राज्य है।
6. भू-आकृतिक दृष्टि से राजस्थान को चार प्रदेशों में बांटा गया है।
7. पश्चिमी मरूस्थलीय प्रदेश में 57.8 प्रतिशत भू-भाग पर 30 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है।
8. अरावली पर्वत राजस्थान में दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व दिशा में 550 किलोमीटर की लम्बाई में फैला है।
9. अरावली की सबसे ऊँची चोटी गुरूशिखर सिरोही जिले में स्थित है।
10. राजस्थान के पूर्वी मैदान में बनास बेसिन व छप्पन का मैदान शामिल किया जाता है।
11. नदियों की अधिकता के कारण बांसवाड़ा को 'सौ टापुओं का क्षेत्र' के नाम से जाना जाता है।
12. राजस्थान का दक्षिणी-पूर्वी पठार हाड़ौती के नाम से विख्यात है।
13. राजस्थान की अपवाह प्रणाली अरावली पर्वतमाला से निर्धारित होती है।
14. राज्य का लगभग आधा क्षेत्र अन्त:स्थलीय प्रवाह प्रणाली के अन्तर्गत आता है। जल प्रवाह के दृष्टिकोण से अरावली का पश्चिमी व दक्षिणी भाग अरब सागरीय प्रवाह प्रणाली में आता है जबकि अरावली का पूर्वी भाग बंगाल की खाड़ी की प्रवाह प्रणाली में आता है।
15. माही व उसकी सहायक सोम, जाखम नदियों के संगम पर आदिवासियों का बेणेश्वर मेला लगता है।
16. कान्तली, साबी, काकनी एवं घग्घर प्रमुख अन्त:स्थलीय प्रवाह वाली नदियाँ है।
17. सांभर, डीडवाना, पचपद्रा, लूणकरणसर व कुचामन राजस्थान की प्रमुख खारे पानी की झीलें हैं।

अभ्यास प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न -

1. आहड़ जिस जिले में स्थित है, वह है -
   (अ) बाड़मेर (ब) उदयपुर
   (स) बीकानेर (द) सीकर
2. स्वर्णगिरी जिस क्षेत्र का पुराना नाम है, वह है -
   (अ) नागौर (ब) सांभर
   (स) जालौर (द) गंगानगर
3. निम्न में से जो नदी अरब सागरीय प्रवाह प्रणाली की है, वह है -
   (अ) बनास (ब) बाणगंगा
   (स) पार्वती (द) माही
4. राजस्थान की सबसे बड़ी मीठे पानी की झील है -
   (अ) कायलाना (ब) नक्की
   (स) जयसमन्द (द) पुष्कर

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न -

5. वर्तमान राजस्थान कब बना?
6. मत्स्य संघ में कौन-कौनसी रियासतें शामिल हुई थी?
7. राजस्थान का कुल क्षेत्रफल कितना है?
8. राजस्थान की अपवाह प्रणाली को कौनसा पर्वत दो भागों में बांटता है?
9. साबरमती नदी कहां से निकलती है?

लघूत्तरात्मक प्रश्न -

10. राजस्थान की अवस्थिति बताइये।
11. राजस्थान के मुख्य भौतिक विभाग कौन-कौनसे हैं?
12. दक्षिणी अरावली क्षेत्र की धरातलीय विशेषताओं का वर्णन कीजिये।
13. पूर्वी मैदान का विस्तार बताइये।
14. राजस्थान की बंगाल की खाड़ी प्रवाह प्रणाली को स्पष्ट कीजिये।
15. राजस्थान की खारे पानी की झीलें बताइये।

निबन्धात्मक प्रश्न -

16. राजपूताना से राजस्थान का निर्माण कितने चरणों में हुआ? सारणीबद्ध कीजिए।
17. राजस्थान को भौतिक विभागों में विभक्त कीजिए तथा पश्चिमी मरूस्थलीय प्रदेश का विस्तार से वर्णन कीजिए।
18. अरावली पहाड़ी क्षेत्र के भौतिक स्वरूप को समझाइये।
19. राजस्थान की प्रवाह प्रणाली का वर्णन कीजिए।

आंकिक प्रश्न -

20. राजस्थान के रूपरेखा मानचित्र पर निम्नलिखित को दर्शाइये -
   (i) कर्क रेखा, (ii) अरावली पर्वत,
   (iii) पड़ौसी राज्य, (iv) अन्तर्राष्ट्रीय सीमा
21. राजस्थान के रूपरेखा मानचित्र पर भौतिक विभाग दर्शाइये।
22. राजस्थान के रूपरेखा मानचित्र पर जल विभाजक सहित प्रमुख नदियों को दर्शाइये।
22. राजस्थान के रूपरेखा मानचित्र पर जल विभाजक सहित प्रमुख नदियों को दर्शाइये।

उत्तरमाला - 1.ब 2.स 3.द 4.स